

Padma Shri



SHRI PREM CHAND SHARMA

Shri Prem Chand Sharma is a progressive and innovative tribal farmer and community leader from Uttarakhand. He is also a popular poet who writes and recites poems in popular folklore to encourage the farming community to stay connected to the roots, to popularize the innovative ways of sustainable/ organic farming and to protect the environment.

2. Born on 11th October, 1957 in a poor farming family in a remote tribal dominated village- Tyuni, Dehradun, Uttarakhand, Shri Sharma, through his sheer hard work has emerged as the successful farmer and a role model for the farming community not only in the state of Uttarakhand but all over the country. In the beginning, he used to work in the apple farms of neighbouring Himachal Pradesh for sustenance. Through his perseverance and dedicated efforts, despite having studied only till fifth standard, he is on the panel of NABARD as technical expert for farming from Uttarakhand. He is also serving on the management committee of the University of Horticulture and Forestry, Bharsar of Uttarakhand.

3. Shri Sharma, through his dedicated efforts and innovative farming practices has transformed village Attal into one of the model villages with an annual turnover of vegetables and fruits of over 1.5 crore. He has introduced commercial cultivation of pomegranate along with off-season cultivation of broccoli, cauliflower, French bean, capsicum for the first time in the state of Uttarakhand. He has developed cost effective and environment friendly mulching technique in pomegranate and staking technique in tomato leading to very yields besides high quality of the produce. He has established a nursery to make available high-quality plants of Apple, Pomegranate and Walnut to the farmers of Uttarakhand and neighbouring Himachal state, besides government nurseries. For his outstanding efforts in the promotion of Pomegranate, he has earned himself the nickname of Anar wale Sharma ji.

4. Shri Sharma's efforts have enabled the social transformation in the area. He led the effort to bring water to his village from 7 kilometers through a Government sponsored scheme, which ensured that 200 farm families decided not to migrate from the village in search of greener pastures elsewhere and 180 of these are already excelling in different areas of farming. Encouraged by these efforts, farmers in the area have developed many smaller water harvesting units. Through his efforts, more than 20,000 farmers across states have got benefitted directly and more than 1 lac farmers so far indirectly by getting hands on training, quality planting material and the market linkages. He has also initiated scholarships to promote talented tribal students to continue their studies. Owing to the efforts made by him, the livelihood opportunities in this tribal dominated area have increased and the unemployed youth are now choosing farming. He has founded a community organization- "Phal Evam Sabji Utpadan Samiti" for promoting off-season vegetable cultivation which has uplifted the socio-economic condition of the tribal farmers of the area.

5. Shri Sharma's contribution towards developing and promoting new agricultural technology and innovative practices has been recognized both at state and national level. He has been honoured with the "Unsung Hero - Samman Patra by the Government of Uttarakhand in 2016. The national level awards and recognitions received by him include the certificate of recognition for outstanding efforts in soil and water conservation, 2014; Kisan Samman, 2014; Jagjivan Ram Abhinav Kisan Puraskar, 2018 from the Indian Council of Agricultural Research, New Delhi and Krishak Samrat Samman, 2015 from Mahindra Samridhi India Agri Awards. His successful model of horticulture and organic farming has received wide coverage by the print and electronic media. His stories have found place in the Times of India, Hindustan Times, The Tribune among others. Doordarshan has also prepared a documentary for publicizing his success story for the benefit of the farmers of the country.



श्री प्रेम चन्द्र शर्मा

श्री प्रेम चन्द्र शर्मा उत्तराखण्ड के एक प्रगतिशील और नवान्वासी आदिवासी किसान और समुदाय के नेता हैं। वह एक लोकप्रिय कवि हैं जो अपनी मूल संस्कृति से जुड़े रहने के लिए कृषक समुदाय को प्रोत्साहित करने, स्थायी और आर्गेनिक कृषि के अभिनव तरीकों को लोकप्रिय बनाने तथा पर्यावरण संरक्षण के लिए लोक साहित्य में काव्य रचना और गायन करते हैं।

2. श्री प्रेम चन्द्र शर्मा का जन्म 11 अक्टूबर 1957 को, दूरदराज के एक जनजातीय बहुल गांव त्यानि, देहरादून, उत्तराखण्ड में एक गरीब कृषक परिवार में हुआ था। अपने कठोर परिश्रम के बल पर, वह न केवल उत्तराखण्ड अपितु समूचे देश में एक सफल किसान और कृषक समुदाय के लिए एक रोल मॉडल के रूप में बनकर उभरे। शुरुआत में, वह आजीविका के लिए पड़ोसी राज्य हिमाचल प्रदेश में सेब के बागानों में काम किया करते थे। केवल पांचवी कक्षा तक पढ़े होने के बावजूद, अपनी लगन और समर्पित प्रयासों की वजह से, उन्हें उत्तराखण्ड से कृषि कार्य से जुड़े तकनीकी विशेषज्ञ के रूप में नाबार्ड के पैनल में स्थान दिया गया है। वह उत्तराखण्ड के बागवानी और वानिकी विश्वविद्यालय, भरसर की प्रबंध समिति में भी अपनी सेवाएं दे रहे हैं।

3. श्री शर्मा ने अपने समर्पित प्रयासों और अभिनव कृषि प्रणालियों की वजह से, गांव अट्टल को एक ऐसे मॉडल गांव के रूप में बदल दिया है जिसका सब्जियों और फलों का वार्षिक कारोबार 1.5 करोड़ से ज्यादा का है। उन्होंने उत्तराखण्ड राज्य में पहली बार ब्रोकली, फूलगोभी, फ्रैन्च बीन, शिमला मिर्च की गैर-मौसमी खेती के साथ-साथ, अनार की व्यावसायिक खेती शुरू की है। उन्होंने अनार पैदावार के क्षेत्र में कम लागत वाली और पर्यावरण अनुकूल मल्लिग तकनीक का विकास किया और टमाटर में भी इस तकनीक का उपयोग करके उसकी उच्च गुणवत्तापूर्ण भरपूर उत्पादन किया। उन्होंने सरकारी नर्सरियों के अलावा, उत्तराखण्ड और पड़ोसी राज्य हिमाचल प्रदेश के किसानों के लिए सेब, अनार और अखरोट की बढ़िया पौध उपलब्ध कराने के लिए एक नर्सरी की स्थापना की। अनार उत्पादन को बढ़ावा देने के उनके उत्कृष्ट प्रयासों के लिए, उन्हें अनार वाले शर्मा जी के उपनाम से संबोधित किया जाने लगा है।

4. श्री शर्मा जी के प्रयासों से, इस क्षेत्र में सामाजिक परिवर्तन का शुभारंभ हुआ। वह सरकार द्वारा प्रायोजित एक स्कीम के जरिए 7 किलोमीटर दूर से अपने गांव में पानी पहुंचाने के प्रयासों में आगे रहे। इससे 200 कृषक परिवारों ने अन्यत्र हरित चरागाह की तलाश में गांव से दूर न जाने का निर्णय लिया और इनमें से 180 कृषक परिवार कृषि के अलग-अलग क्षेत्रों में पहले से ही अपना उत्कृष्ट योगदान दे रहे हैं। इन प्रयासों से प्रोत्साहित होकर इस क्षेत्र के किसानों ने अनेक छोटी-छोटी जल संचयन इकाइयाँ तैयार की हैं। उनके प्रयासों से, पूरे राज्य के 20,000 से ज्यादा किसानों को सीधा लाभ पहुंचा है और अब तक एक लाख किसानों को अप्रत्यक्ष रूप से प्रशिक्षण, गुणवत्तापूर्ण पौधरोपण सामग्री और बाजार संपर्क की सुविधा प्राप्त हो रही है। उन्होंने प्रतिभाशाली जनजातीय छात्रों को पढ़ाई जारी रखने के लिए उन्हें प्रोत्साहित करने के लिए छात्रवृत्ति की भी शुरुआत की। उनके द्वारा किए गए प्रयासों की वजह से, इस जनजातीय बहुल इलाके में आजीविका के अवसर बढ़े हैं और इसके फलस्वरूप, वहाँ के बेरोजगार युवा अब कृषि कार्य को अपना रहे हैं। उन्होंने गैर-मौसमी सब्जी उत्पादन को बढ़ावा देने के लिए एक सामुदायिक संगठन "फल एवं सब्जी उत्पादन समिति" की स्थापना की जिसकी वजह से इस क्षेत्र के जनजातीय किसानों की सामाजिक-आर्थिक स्थिति में भी सुधार हुआ है।

5. नई कृषि प्रौद्योगिकी और अभिनव प्रणालियां विकसित करने और उन्हें बढ़ावा देने की दिशा में, श्री शर्मा जी के योगदान को राज्य और राष्ट्र स्तर पर मान्यता प्रदान की गई है। उन्हें वर्ष 2016 में उत्तराखण्ड सरकार द्वारा "अनसंग हीरो-सम्मान पत्र" से सम्मानित किया गया है। राष्ट्रीय स्तर पर उन्हें प्राप्त पुरस्कार और सम्मान में मृदा और जल संरक्षण के क्षेत्र में उनके उत्कृष्ट प्रयासों के लिए प्रमाणपत्र और सम्मान, 2014; किसान सम्मान 2014; भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद, नई दिल्ली की ओर से प्रदत्त जगजीवन राम अभिनव किसान पुरस्कार, 2018 और महिन्द्रा समृद्धि इंडिया एग्री अवाइर्स द्वारा कृषक सम्राट सम्मान, 2015 शामिल हैं। उनकी सफल बागवानी और आर्गेनिक कृषि के मॉडल को प्रिंट और इलेक्ट्रॉनिक मीडिया द्वारा व्यापक प्रमुखता दी गई है। उनकी सफलता की कहानियां टाइम्स ऑफ इंडिया, हिंदुस्तान टाइम्स, द ट्रिब्यून आदि समाचारपत्रों में छपी हैं। दूरदर्शन ने देश के किसानों को लाभ पहुंचाने में उनकी सफलता की गाथाओं को लोकप्रिय बनाने के लिए एक डॉक्युमेंटरी भी तैयार की है।